सत्य धर्म प्रवेशिका

SATYA DHARMA PRAVESHIKA

(भाग ४)

''जो जीव, राग-द्वेषरूप परिणमित होने पर भी,
मात्र शुद्धात्मा में (द्रव्यात्मा में=स्वभाव में) ही
'मैंपन' (एकत्व) करता है और
उसी का अनुभव करता है, वही जीव सम्यग्दृष्टि है।
यही सम्यग्दर्शन की विधि है।''

लेखक - C.A. जयेश मोहनलाल शेठ
(बोरीवली) B.Com., F.C.A.

सत्य धर्म प्रवेशिका

शास्त्रों में कहा गया है कि आत्मा स्वरूप से शुद्ध है। ऐसा जानकर हमें स्वरूप प्राप्ति का पुरुषार्थ करना है न कि ऐसा मानकर हमें भ्रम में रहना है और उस का आनन्द लेते रहना है।

The scriptures state that purity is the true nature of the soul. Knowing this, we should make focused efforts to attain this true nature. We should not delude ourselves by believing that we are pure. Nor should we take pleasure from our delusion.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अगर हमने मिथ्यात्व दशा में ही अर्थात् बिना स्वात्मानुभूति के ही अपनी आत्मा को शुद्ध मानना शुरु कर दिया और उसी भ्रान्ति का आनन्द लेना प्रारम्भ कर दिया तब हम पुराषार्थहीन दशा को प्राप्त हो जायेंगे। क्यों कि जब हम अपने को शुद्ध ही मानते हों और उसी भ्रम का आनन्द भी लेते हों तब फिर आगे उस शुद्धात्मा को पाने के लिये प्रयत्न करेंगे ही नहीं।

If one starts believing and feeling the bliss of the belief that one is pure without even experiencing the soul, then one is suffering from false belief. And in danger of living in a state where no focused effort is made to attain the experience of the soul. Because if one believes that one is pure and starts deriving pleasure from it, naturally one will not make any focused effort to attain the true nature of the soul.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

यदि हम प्रत्येक जीव से कुछ न कुछ सीखना प्रारम्भ कर दें
तो हमें हर दिन बेहतर बनने से कोई रोक नहीं सकता।

If we start learning from everyone, no one can stop
us from getting better each day.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमने अनादि से प्रभु के उपदेश को कई बार सुना है लेकिन हमने उसे स्वीकार नहीं किया। इस लिये हम अभी तक संसार में भटक रहे हैं।

Since beginningless time, we have heard the teachings of God but never accepted them. This is why we are still wandering in saṃsāra.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम किसी कार्य के लिये प्रयास करते हैं और फिर भी वह कार्य सिद्ध नहीं होता तब हमें उस असफलता को होनी के रूप में स्वीकार लेना चाहिये। उस से हमारा मन आर्तध्यान से बच जाता है।

When we do not succeed at something despite our best efforts, we must accept that failure as predestined and move on. This will save us from - ārta dhyāna (sorrowful meditation).

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

प्रत्येक जीव पुरुषार्थ करता है और उस के पुरुषार्थ की दिशा ही उस जीव का भविष्य तय करती है।

Every living being makes efforts at something. The direction of its efforts determines its future.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हर जीव अपना नाम और ख्याति इसी दुनिया में छोड़ जाता है। केवल कर्म ही साथ जाते हैं। इस लिये पुरुषार्थ नाम और ख्याति के लिये नहीं अपितु आत्मा के उत्थान के लिये करना चाहिये।

Every person leaves behind his name and fame in this world. Only his karmas go with him. Hence, focused efforts should be made not for name and fame but for the upliftment of the soul.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम दूसरों पर हँसते हैं तब हम पाप का बन्ध करते हैं।
इस से भविष्य में हम कई बार हँसी के पात्र बन सकते हैं।

When we laugh at others, we are binding pāpa.
Laughing at others can ensure that in future, we are laughed at.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हर संयोग में जीव या तो प्रसन्न होता है या खिन्न होता है। इस से पापबन्ध होता है। इस लिये संयोग से न तो प्रसन्न होना है और न खिन्न ही होना है। कर्म संयोग जैसा भी हो उसे स्वीकार करना है और उस का अपनी आत्मा के उत्थान के लिये समुचित उपयोग करना है।

Every situation leads either to joy or to sorrow. This causes the inflow and bondage of pāpa. Hence, one should neither feel joy nor sorrow in every situation. One shall accept situations as they are. And use them for the upliftment of one's soul.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब कोई भी जीव सांसारिक वस्तु के लिये संघर्ष करता है तब उस से उसे पाप का बन्ध होता है। सांसारिक वस्तु संघर्ष से नहीं पुण्य से मिलती है। इस लिये सांसारिक वस्तु के लिये संघर्ष नहीं करना है। उस के लिये केवल उचित पुरुषार्थ ही करना है और धर्म के लिये ज़्यादा से ज़्यादा पुरुषार्थ करना है।

When one struggles for worldly goals, one binds pāpa. Worldly goals are achieved not through struggle but through puṇya. Hence, one should not struggle for worldly goals but only make appropriate efforts and do focussed efforts for dharma.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

लोग धन से अपने आप को महान मानने लगते हैं। धन अपने पूर्वकृत पुण्य का ही फल है मगर जब हम धन से अपने आप को महान मानने लगते हैं तब नये पापों का बन्ध होता है जो हमें निर्धन अवस्था में ले जा सकता है। इस लिये धन से अपने आप को महान न मानकर उस का उचित उपयोग करना चाहिये जिस से वह बार-बार मिलता रहे।

People consider themselves great when they have acquired great wealth. Wealth is the result of past puṇya. But when we equate wealth with greatness, we acquire fresh pāpa. This pāpa can lead to poverty. Hence, one should not consider oneself to be great if one is rich. Instead, wealth should be used wisely so that it is gained repeatedly.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सच्चा सुख वैराग्य से आत्मज्ञान प्राप्त करने के बाद ही चखने को मिलता है। सारा सांसारिक सुख छलावा मात्र ही है। जिसे सांसारिक सुख ही प्रिय हैं ऐसे जीव को वे नियम से दु:ख के कारण बनते हैं।

True bliss can only be experienced after self-realisation is acquired through indifference to worldly desires and possessions. All worldly pleasure is nothing but an illusion. He who only seek worldly pleasures, the very same worldly pleasures become a cause for his suffering.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

कामयाबी पुण्य से मिलती है और हम समझते हैं कि वह हमारी क़ाबिलीयत से मिली है। कामयाबी सिर्फ़ क़ाबिलीयत से नहीं मिला करती।

Success depends on punya and we think it has come because of our capability. Success does not come only because of capability.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सत्य धर्म के फलस्वरूप अनुकूलता और अनाकुलता (सच्चा सुख) दोनों ही मिलते हैं।

He who follows the Satya Dharma gains both convenience and anxiety-free existence (true bliss).

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम पढ़ाई करके डिग्री तो हासिल कर लेते हैं, मगर साथ में सच्ची समझ को भी बढ़ाकर आत्मकल्याण के बारे में कभी नहीं सोचते।

We study and get a degree but never think of increasing true insight and about our spiritual upliftment.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम किसी के प्रति चाहत को ही भक्ति मान लेते हैं। लेकिन जब भक्ति सम्यक् होती है तब एकमात्र आत्मा के प्रति ही चाहत शेष रह जाती है।

We consider loving someone to be bhakti (truly committed spiritual devotion). But when samyak bhakti arises, only love for the soul remains.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जीव अपना सारा जीवन उपाधि इकट्ठा करने में ख़र्च कर देता है फिर भी सन्तोष नहीं मिलता। यह रोग अनादि का है इस से जीव को बचना है।

Man spends all his time trying to accumulate various types of belongings for himself but he is never content. This ailment has been present since beginningless time. One must beware of it.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जीव की दृष्टि सदैव अपनी कमियों पर ही रहती है, जिस से वह सदैव दु:खी रहता है। हमें अपनी दृष्टि सदैव अपनी अच्छाइयों पर रख कर ख़ुश रहना है और जब भी कमियाँ दिखें उन्हें दूर करने का प्रयत्न करना है।

One is constantly focused on one's own shortcomings and hence is always miserable. One must always focus on one's good qualities and remain happy. Whenever one perceives one's shortcomings, one must try to get rid of them.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम जीवन भर जो भी काम करते हैं उसी से हमारा व्यक्तित्व पहचाना जाता है और उसी से कर्म बन्धते हैं। इसी लिये हमें जीवन भर अच्छे काम करने चाहिये।

We are known for what we do all our life. We also bind karmas on the basis of what we do all our lives. Hence, we must commit good deeds all our lives.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सच्ची साधना वह होती है जो हमें अपने स्वभाव के क़रीब ले जाये। बाक़ी सारी साधना नाममात्र की साधना है।

True spiritual practice brings us closer to our true selves. All other spiritual practises are merely namesakes.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

संयोग अच्छे हों या बुरे, हमें हर संयोग से कुछ न कुछ सीखना चाहिये।

Circumstances may be good or bad, we must learn something from each and every situation.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जो अपने को मात्र वर्तमान पर्याय जितना ही मानता हो वह सत्य को प्राप्त नहीं कर सकता। आत्मा त्रिकाल है, उसे वर्तमान पर्याय जितना ही मानने से मिथ्यात्व ही दृढ़ होता है।

He who thinks himself to be only his current manifestation cannot attain the truth. The soul is eternal. It existed in the past, exists now and shall exist forever. Believing that it exists only for the duration of the current manifestation is incorrect and only strengthens one's delusion.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें अपनी दृष्टि अनुसार ही अभेद-अखण्ड आत्मा प्राप्त होती है। अगर अपनी दृष्टि भेद पर है तो अभेद-अखण्ड आत्मा प्राप्त नहीं होती।

We attain the whole, monolithic, indivisible soul as per our viewpoint. In case our viewpoint is focused on partition-differentiation, we shall not attain the monolithic and indivisible soul.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मा को समझाने के लिये उस में द्रव्य-गुण-पर्याय इत्यादि भेद किये गये हैं। अनन्त गुणभेद-शक्तिभेद भी किये गये हैं। वास्तव में आत्मा एक-अभेद है, उस में कोई भेद नहीं है। अगर हमने बिना स्वात्मानुभूति के उन शक्तियों का भ्रमित आनन्द लेना प्रारम्भ किया तब फिर एक-अखण्ड आत्मा का अनुभव सम्भव नहीं है। क्योंकि भेद में रमते हुए अभेद का अनुभव असम्भव है।

Divisions like dravya, guṇa, paryāya are notional and only made to explain the soul. Endless other divisions are also made on the basis of the attributes and powers of the soul. In reality, the soul is one, monolithic and indivisible. If without experiencing the soul, we deludedly start taking pleasure in the attributes and powers of the soul then it is not possible to experience the soul which is one, indivisible and monolithic. One who is focussed on divisions cannot experience the monolithic and indivisible soul.

Dravya — substance, real
Guṇa — the permanent, unchanging and inalienable attribute of a substance
Paryāya — the present state of a substance

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मा को समझाने के लिये उस में द्रव्य-गुण-पर्याय इत्यादि भेद किये गये हैं। वास्तव में आत्मा एक-अभेद है, उस में कोई भेद नहीं है। अगर हम उन में से किसी भी भेद को भौतिक रीति से निकालकर शुद्धात्मा का अनुभव लेना चाहेंगे तो शुद्धात्मा का अनुभव सम्भव ही नहीं है। क्योंकि भेद में रमते हुए अभेद का अनुभव असम्भव है।

Divisions like dravya, guṇa, paryāya are notional and only made to explain the soul. In reality, the soul is one, monolithic and indivisible. If we try to artificially create physical divisions in the soul and then try to experience the pure state of the soul, it will not be possible to do so. Because the one who is focussed on divisions cannot experience the monolithic and indivisible soul.

Dravya — substance, real
Guṇa — the permanent, unchanging and inalienable attribute of a substance
Paryāya — the present state of a substance

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जानकारी हेतु आत्मा की महिमा जानने-पढ़ने में कोई दिक़्क़त नहीं। लेकिन अगर हमने बिना स्वात्मानुभूति के उस महिमा का भ्रमित आनन्द लेना प्रारम्भ कर दिया तो फिर हम पुरुषार्थहीन दशा को प्राप्त हो जायेंगे। अगर हमने अपने आप को वर्तमान पर्याय में ही महिमावान मान लिया तो फिर आगे उस महिमा को प्रकट करने का पुरुषार्थ क्यों करेंगे? अर्थात् नहीं करेंगे।

There is no problem if we try to know or study the greatness of the soul for the sake of knowledge. But if without experiencing the soul, we deludedly start taking pleasure in the greatness of the soul, we shall stop striving towards experiencing the soul (and stagnate in misguided hubris). If we fool ourselves into thinking that we are currently enjoying the greatness of the soul despite our mithyātva, we shall stop striving to achieve the greatness of the soul.

Mithyātva (absence of samyaktva) – false belief, deluded faith

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

पर में एकत्व करने वालों को अनन्त काल तक स्वात्मानुभूति नहीं मिलती। इस से वे अनन्त काल तक संसार में भटकते हुए दु:ख झेलते हैं।

Those who identify with the non-self shall never ever experience the true self — the soul. Consequently, they remain stuck in endless transmigration, wandering in saṃsāra immersed in grief.

Saṃsāra — worldly existence, mundane existence, cycle of birth and rebirth, transmigration

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

बिना अपनी ग़लती सुधारे हमें कामयाबी नहीं मिल सकती। इस लिये हमें ठण्डे दिमाग़ से अपनी ग़लत धारणाओं को सम्यक् कैसे करें इस के बारे में सोचना चाहिये।

We cannot be successful without resolving our mistakes. Hence, with a cool mind, we must think about how to correct our false beliefs and attain samyaktva.

Samyaktva (absence of mithyātva) – enlightened understanding

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम अपने चित्त को जिन विचारों में मग्न रखते हैं वही विचार
हमारी आत्मा की दिशा और दशा तय करते हैं।

The thoughts that we immerse ourselves in, decide
the direction and state of our soul.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम अपनी ग़लती बतानेवालों पर क्रोध करना प्रारम्भ कर देते हैं तब हमारी प्रगति रुक जाती है।

We stop growing when we start getting angry at those who point out our mistakes.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अगर हमें धर्म में सफल होना है तो हमें शास्त्रों का सर्वांगीण अभ्यास करके अपनी धारणा सम्यक् बनाने पर ध्यान देना चाहिये।

If we wish to succeed in the path of dharma, we shall have to study the scriptures thoroughly and comprehensively; and focus on developing a real understanding.

Samyak (free from of mithyā) — enlightened, correct, real, appropriate, laudable

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अगर हम सत्ता के शिखर पर विराजमान होकर
अन्याय-अनीति करते हैं तो हमारा भविष्य अन्धकारमय ही
होगा यह बात तय है।

It is absolutely certain that our future shall be dark
if we indulge in unfair and unethical practices
when seated at the apex of power.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

धर्म की हर क्रिया के पीछे कुछ न कुछ उद्देश्य अवश्य होता है। उसे जानकर उस उद्देश्यपूर्ति के लिये ही वह क्रिया करनी चाहिये।

There is always some purpose behind each and every practice laid down by dharma. One must know it and perform that practice only for that specific purpose.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम जो भी धर्म करें वह आत्महित के लिये ही करें यह सुनिश्चित करना चाहिये।

We have to ensure that whatever form of dharma we practise, we do it for the sole purpose of benefiting the soul.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हमारे पुण्य का उदय हो अर्थात् सभी सुख-सुविधायें प्राप्त हों तब अगर हम धर्म नहीं करते तो हमारा भविष्य अन्धकारमय ही होगा यह बात तय है।

It is absolutely certain that if we do not practise dharma despite experiencing the rise of puṇya, i.e. enjoying material comforts, our future shall be dark.

Puṇya — merit

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अपनी सोच से ही अपना अभिप्राय बनता है और अभिप्राय अनुसार ही कर्मों का अनुबन्ध होता है। इस लिये हमें अपनी सोच सही करने का प्रयास हर दम करते रहना चाहिये।

Our thoughts lead us to conviction and we bind karmas in accordance with our conviction. Hence, we must constantly try to correct our thinking.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

पर्याप्त धन इकट्ठा करके धर्म करेंगे यह कभी सोचना ही नहीं चाहिये। क्योंकि हमारा मन ऐसा है कि जितना भी धन प्राप्त हो कभी पर्याप्त लगता ही नहीं।

Do not ever think that you will practise dharma after earning enough wealth. Because our mind is such that we never think that we have earned enough!

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

धर्म के प्रति सच्ची लगन ही हमें अपने मक़ाम तक पहुँचायेगी।

Only true commitment towards dharma shall take us to our destination (mokṣa).

Mokṣa — liberation, permanent freedom from the cycle of birth and death, the eternal state of supreme bliss

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिस ने भी आत्म प्राप्ति की है, वह निश्चित ही भविष्य का भगवान है। उस का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है।

Anyone who achieves enlightenment shall definitely become god in future. His/her future is exceedingly bright.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

तीव्र राग आत्म प्राप्ति के लिये बाधक कारण है। उस का सम्यक् शमन किये बिना ज्ञान की शीतलता का लाभ नहीं मिल सकता, आत्म प्राप्ति नहीं हो सकती।

Intense attachment is an obstacle to enlightenment. You cannot attain the soothing bliss of knowledge without overcoming attachment appropriately. Enlightenment cannot happen in the presence of intense attachment.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्म प्राप्ति के लिये लघुता आवश्यक है क्यों कि उसी से अपने ग़ुरूर का नाश होता है। ग़ुरूर के नाश होने पर ही हम आत्म-प्राप्ति के निकट पहुँचते हैं।

Humility is necessary for the enlightenment of the soul because it destroys arrogance. Only when you conquer arrogance do you come closer to enlightenment.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

धन के लिये धर्म नहीं किया जाता बल्कि सत्य धर्म से धन सहज ही प्राप्त होता है। परन्तु उस धन में अगर हम सुखबुद्धि रखते हैं तब वह धन अपना अहित ही करता है। इस लिये धर्म हमें सिखाता है कि आत्मा के अलावा कहीं भी सुखबुद्धि नहीं करनी चाहिये।

You should not practise dharma for gaining money. Wealth comes effortlessly if you practise true dharma. If we believe that money leads to happiness, we are harming our soul. This is why dharma teaches us that happiness is found only in the soul and nowhere else.

Sukhabuddhi — belief that a certain thing causes happiness

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अपने आप को बदलना सब से आसान है फिर भी उस के लिये हम कभी प्रयास नहीं करते। अपने आप को धर्म के अनुकूल बदलना सम्यग्दर्शन की योग्यता प्राप्त करने के लिये अनिवार्य है।

It is easiest to change oneself. Despite that, we never attempt to change ourselves. It is essential to change oneself as per the teachings of dharma in order to qualify to attain samyaktva.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

मुझे अपना फ़र्ज़ पूरी सच्चाई और ईमानदारी से निभाना है लेकिन दूसरों से ऐसी अपेक्षा नहीं रखनी है क्यों कि अपेक्षा दु:ख का कारण है।

I have to perform my duty to the best of my ability but not expect others to do their best because expectations lead to grief.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जो लोग सम्पत्ति के लिये लड़ते हैं तथा दूसरों को धोखा देते हैं वे लोग अपना अनन्त काल विपत्ति युक्त बना लेते हैं। इस से हमें पता चलता है कि सम्पत्ति के लिये लड़ना-धोखा देना समझदारी नहीं बल्कि नितान्त मूर्खता है।

People who fight and deceive others for money ensure that they will have innumerable rebirths filled with torment. This tells us that fighting and deceiving others is extremely foolish and not smart at all.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आज कल लोग आत्म प्राप्ति किये बिना ही प्रभावना करने निकल पड़ते हैं। सच्ची प्रभावना आत्म प्राप्ति के बाद ही सम्भव है। पहले आत्म प्राप्ति कर के उस के लिये दिशा निर्देश देना सब से बड़ी प्रभावना है।

These days, people start promulgating dharma without attaining enlightenment. But true promulgation is only possible after one has attained enlightenment. The best way to promulgate dharma is to first attain enlightenment oneself and then advise others on how to go about attaining it.

Prabhāvanā — promulgation

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे सत्य धर्म पाना है उसे अपनी तीव्र पसन्द-नापसन्द को सम्यक् प्रकार से हटाना होगा।

One who wishes to attain true dharma shall have to properly overcome his/her intense likes and dislikes.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे लोग क्या कहेंगे इस बात की चिन्ता है वह सत्य धर्म नहीं पा सकेगा क्यों कि वह लोक संज्ञा से संचालित हो रहा है, उसके पास सत्य के लिये लोक संज्ञा छोड़ने की हिम्मत नहीं।

He who is worried about what people will say shall never be able to attain the real dharma because he allows himself to be led by public opinion. He does not have the courage to give up the popular path for the sake of the truth.

Loka Saṃjñā — to blindly follow the general public

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे संसार में सुख प्रतित हो रहा है उस के लिये सत्य धर्म समझना कठिन है।

One who is under the impression that happiness lies in saṃsāra would find it difficult to understand the real dharma.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम अपने दोषों की वजह से ही सत्य धर्म से दूरी बनाये रखते हैं, हमें उन दोषों की सम्यक् चिकित्सा करनी चाहिये।

We stay away from the true dharma only because of our flaws. We should remove our flaws in an appropriate manner.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

मैत्री भावना – सर्व जीवों के प्रति मैत्री चिन्तवन करना, मेरा कोई दुश्मन ही नहीं ऐसा चिन्तवन करना, सर्व जीवों का हित चाहना।

प्रमोद भावना – उपकारी तथा गुणी जीवों के प्रति, गुण के प्रति, वीतरागधर्म के प्रति प्रमोदभाव लाना।

करुणा भावना – अधर्मी जीवों के प्रति, विपरीत धर्मी जीवों के प्रति, अनार्य जीवों के प्रति करुणाभाव रखना।

मध्यस्थ भावना – विरोधियों के प्रति मध्यस्थभाव रखना।

– मुखपृष्ठ की समझ –

अपने जीवन में सम्यग्दर्शन का सूर्योदय हो और उसके फलरूप अव्याबाध सुखस्वरूप सिद्ध अवस्था की प्राप्ति हो, यही भावना।